Phoenix: International Multidisciplinary Research Journal
Vol 4, No. 4, Oct-Dec, 2026
ISSN: 2583-6897

शीर्षक: वाणी भूषण ग्रन्थ में वर्णित चयनित मात्रावृत्त का अध्ययन

लेखक: डॉ. आनंद महेशभाई गढ़वी

पद: पूर्व शोधछात्र, संस्कृत विभाग

संस्थान: महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी भावनगर यूनिवर्सिटी, भावनगर

अमूर्त (Abstract):

प्रस्तुत शोध-पत्र महाकवि दामोदर मिश्र द्वारा विरचित 'वाणी भूषण' ग्रन्थ पर आधारित है। 'वाणी भूषण' छन्दःशास्त्र का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसमें संस्कृत और प्राकृत छन्दों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इस शोध-लेख का मुख्य उद्देश्य ग्रन्थ में वर्णित विशिष्ट 'मात्रावृत्त' छन्दों का सोदाहरण विश्लेषण करना है। इसमें चयनित चार मात्रावृत्त छन्दों के लक्षण, संरचना और उनके काव्यगत प्रयोग का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

कीवर्ड: वाणी भूषण, दामोदर मिश्र, मात्रावृत्त, छन्दःशास्त्र, संस्कृत काव्यशास्त्र।

प्रस्तावना:

भारतीय साहित्य परम्परा में छन्दःशास्त्र का स्थान वेदों के षडङ्गों में 'छन्दः पादौ तु वेदस्य' कहकर सर्वोपरि माना गया है। लौकिक संस्कृत साहित्य में छन्दों के दो मुख्य प्रकार हैं— वर्णवृत्त (अक्षर गणना आधारित) और मात्रावृत्त (मात्रा गणना आधारित) है। दामोदर मिश्र कृत 'वाणी भूषण' ग्रन्थ विशेष रूप से कवियों के मार्गदर्शन के लिए लिखा गया है, जिसमें छन्दों के स्वरूप को सरल और बोधगम्य रूप में प्रस्तुत किया गया है।

शोध का उद्देश्य:

- दामोदर मिश्र की छन्द-निरूपण शैली को समझना।
- वाणी भूषण में वर्णित चयनित मात्रावृत्त छन्दों के शास्त्रीय लक्षणों का विवेचन करना।
- छन्दों की मात्रा गणना और यति-गति के नियमों का स्पष्टीकरण करना।

वाणी भूषण में मात्रावृत्त छन्द:

मात्रावृत्त वे छन्द हैं जिनमें मात्राओं की संख्या निश्चित होती है, न कि वर्णों की। 'वाणी भूषण' में इन छन्दों को बड़े ही तार्किक ढंग से समझाया गया है। “प्राकृत पैगलम्” ग्रन्थ से दामोदरजी ने यह प्राकृत मात्रिक छन्दो को संस्कृत उदाहरण और लक्षण सहित रखा है। सर्व मात्रावृत्त में से निम्नलिखित चार प्रमुख छन्दों का विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है:

मात्रावृत्त : प्रज्झटिका

‘प्रज्झटिका’ नामक इस मात्रावृत्त का लक्षण ग्रन्थोक्त देखते हैं।

चत्वारि चतुष्कलकानि धेहि तत्रापि जगणमन्ते निधेहि।

भणिता फणिनायकपिंगलेन प्रज्झटिकेयं षोडशकलें ।। वाणीभूषण, १/७१

लक्षण अनुसार प्रत्येक चरण में चार का चतुष्कल यानि की 4 \times 4 = 16 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण के अन्त में ‘ज’ गण यानि की ज भा न ल गा ल प्रयुक्त होता है।

ऐसे ही 16 \times 4 चरण = ६४ मात्रायुक्त चन्द्र की षोडश कला प्रति चरणयुक्त ‘प्रज्झटिका’ छन्द बनता है। अब उदाहरण ही देख लेते हैं।

रमते न मन: परितापधारि,

न मनागपि विरमति नयनवारि।

यदवधि हरिणीदृकपथम गामि,

तदवधि बाधाशतमनुभवामि ।। वाणीभूषण, १/७२

भावार्थ:- "मेरा यह संताप (दुःख) से भरा हुआ मन कहीं भी रमता नहीं है (कहीं भी सुख नहीं पाता), और आँखों से बहने वाले आँसू पल भर के लिए भी नहीं रुकते हैं। जब से वह मृगनयनी (हरिणी के समान सुंदर नेत्रों वाली) मेरी नज़रों से ओझल हुई है, तब से मैं सैंकड़ों बाधाओं और कष्टों का अनुभव कर रहा हूँ।"

उपरोक्त प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ कुल

६४ मात्रायुक्त प्रज्झटिका छन्द निर्मित करती है।

प्रथम चरणान्ते— प धा रि – ज भा न – ज गण।

द्वितीय चरणान्ते— न वा रि – ज भा न – ज गण।

तृतीय चरणान्ते— म गा मि— ज भा न – ज गण ।

एवं चतुर्थ चरणान्ते – भ वा मि— ज भा न— ज गण ।

का निर्माण करता है । लक्षण एवं उदाहरण एक दूसरे से सुसंबद्ध प्रतीत होते हैं ।

मात्रावृत्त : अरिला

'अरिला' नामक मात्रिक छन्द का लक्षण 'वाणीभूषण' ग्रन्थानुसार देखते हैं ।

छन्दसि षोडशकले विलासिनि प्रतिपदमनो यमक विलासिनी ।

अरिला नाम पयोधरधारिणि शेषे लघुद्वयधारिणि ।। वाणीभूषण,१/७३

लक्षणानुसार प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती है । चरणों में यमक अलङ्कार का प्रावधान है । पयोधर यानि की 'ज' गण का उपयोग निषिद्ध हो । चरण के अन्त में दो लघु मात्रा आनी चाहिए । इस प्रकार ४ चरण x १६=६४ मात्रायुक्त 'अरिला' छन्द का स्वरूप है । 'वाणीभूषण' ग्रन्थानुसार अरिला का उदाहरण देखते हैं ।

किं कीनाश पाशधर गर्जसि,

मामुपगम्य दासभरम सर्जसि ।

हरिचरणं शरणं न हि पश्यसि,

यन्नामंश्रवणादपि नश्यसि ।। वाणीभूषण, १/७४

भावार्थ:- "हे पाश धारण करने वाले अंतक (यमराज)! तुम क्यों गरज रहे हो? मेरे पास आकर मुझे अपना दास बनाने का व्यर्थ प्रयास क्यों कर रहे हो? क्या तुम भगवान (हरि) के चरणों की उस शरण को नहीं देख रहे हो, जिनका केवल नाम सुनने मात्र से ही तुम्हारा (मृत्यु के भय का) नाश हो जाता है?"

उपर्युक्त उदाहरण में प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ आती है । प्रथम चरण के अन्त में 'गर्जसि' में अन्तिम दो लघु है क्योंकि 'ग' वर्ण यहाँ पर र कार की मात्रा से गुरू बनता है । द्वितीय चरण के अन्त में 'सर्जसि' भी इसी प्रकार अन्तिम दो वर्णों को लघु बनाता है । तृतीय चरणान्ते 'पश्यसि' शब्द के दो अन्तिम वर्ण लघु मात्रा दर्शाते है एवं चतुर्थ चरण के अन्त में 'नश्यसि' के अन्तिम दो वर्ण छन्दलक्षणानुसार दो लघु मात्राओं का निर्देश करते है ।

मात्रावृत्त : पादाकुलकम्

'पादाकुलकम्' मात्रावृत्त का लक्षण 'वाणीभूषण' ग्रन्थानुसार देखते है ।

अक्षर लघु गुरू नियम विरहितं, भुजंगराज पिंगलपरिगणितम् ।

भवति सुगुम्फीतषोडशकलकं, वाणीभूषण पादाकुलकम् ।। वाणीभूषण, १/७५

उपरोक्त व्याख्यानुसार लघु, गुरू वर्ण के नियम से रहित यह छन्द में भुजंगराज पिंगल अनुसार षोडश कल यानि की प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती है। इस तरह से १६ x ४ चरण = ६४ मात्रा युक्त 'पादाकुलकम्' नामक मात्रिय छन्द निर्मित होता है। इस छन्द का उदाहरण ग्रन्थानुसार देखते है।

मलयपवनहृत कुसुम परागः,

परभृतनिभृत रणितवनभागः ।

चिर तरं संचित मान दुरन्तः,

कस्य न सुहृमुपनयंति वसन्तः ।। वाणीभूषण, १/७६

भावार्थ:- मलय पर्वत से आने वाली शीतल हवा (मलय पवन) द्वारा पुष्पों का पराग हरण कर लिया गया है (अर्थात् हवा सुगंधित पराग से भर गई है), और वन का वह भाग कोयल की मधुर कूक (गुंजन) से गूंज रहा है।

लंबे समय से संचित वह मान (रूठना या अभिमान) जिसका अंत होना अत्यंत कठिन था; ऐसे में यह वसंत ऋतु भला किसके मन को पिघलाकर उसे अपने प्रिय (मित्र) के सम्मुख नहीं ले आती?

उपरोक्त उदाहरण में प्रत्येक चरण में लक्षणानुसार षोडश कल यानि की १६ मात्राएँ आती है। अतः १६+१६+१६+१६=६४ मात्रायुक्त लक्षण अनुसार 'पादाकुलकम्' नामक मात्रिक छन्द बनता है। पूर्वोक्त 'प्रज्झटिका' एवं 'अरीला' जैसे गणबन्ध- अन्त्य लघु मात्रा इत्यादि नियम इस छन्द में लागू नहीं होते है। इस तरह श्री दामोदर मिश्रजीने पादाकुलकम् छन्द के लक्षण एवं उदाहरण दिये है।

मात्रावृत्त : षट्पदम्

'षट्पदम्' नामक मात्रिक छन्द का लक्षण ग्रन्थानुसार देखते हैं।

षट्कलमादौ तदनु चतुस्तुरगं परिसंतनु,

शेषे द्विकलं कलय चतुष्पदभेवं संचिनु।

छन्द षट्पदनाम भवति फणिनायकगीतं,

रूदे विरतिमुपैति नृपतिसुखकरमुपनीतम्।

उल्लालेयुगलमत्र च, भवेद्वष्टाविंशतिकलमितं,

श्रृणु पंचदशे विरतिस्थितपठनादपि पण्डितजनहितम् ।। वाणीभूषण, १/७७

लक्षणानुसार षट्कल को ४ मात्राओं से गुनकर ६ x ४ = २४ मात्राएँ, द्विकल प्रथम-तृतीय चरण में २४ मात्राएँ एवं एसे चार उल्लाला छन्द की भान्ति चरण रखके, दो चरण दोहे के जोड़ के षट्पदम् छन्द बनता है। व्याख्या में हरेक चरण की स्पष्ट मात्राएँ नही लिखी है परन्तु उदाहरण देखके मात्राएँ तय करते है।

वामकरोदरकलित, कमलसोदररूचिवदना,

गुरूपुरतोअपि तवैव, नाम जल्पति गुरूमदना,

भवदभिलिखनविशेष, रभस परिशेषित दिवसा,

मुञ्चति चन्द्रभयेन, रजनिमधि जीवितमपि सा,

हृदि विनिहित भवदभि शरण, रसरत्नातरन्नादनन्नावति।

भवदीय विलोकनमन्तरा, न मनोरथसुखमनुभवति ।। वाणीभूषण, १/७८

भावार्थ:- वह (नायिका) अपने बाएं हाथ की हथेली पर अपना मुख टिकाए हुए है, जिसका मुख कमल के समान सुंदर और कांतिवान है। वह अपने गुरुजनों (बड़ों) के सामने भी केवल तुम्हारा ही नाम जपती रहती है, क्योंकि वह प्रेम के उन्माद में डूबी हुई है।

तुम्हारे चित्र को बनाने या लिखने में विशेष रूप से तल्लीन रहने के कारण, उसके दिन बड़ी व्याकुलता और वेग के साथ बीत रहे हैं। वह चंद्रमा के (शीतल प्रकाश के) भय से मानो रात्रि में अपना जीवन ही त्याग रही है (अर्थात् विरह में उसे चांदनी भी कष्टदायक लग रही है)।

उसने अपने हृदय में केवल तुम्हारी ही शरण ली है और वह प्रेम के रस के सागर में निरंतर मग्न रहती है। तुम्हारे दर्शन के बिना, वह अपने मन में किसी भी प्रकार के सुख का अनुभव नहीं कर पा रही है।

उपर्युक्त उदाहरण में निम्नोक्त मात्राएँ है।

चरण	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठ	कुल
मात्रा	२४	२३	२४	२१	२५	२७	१४४

इस तरह १४४ मात्रायुक्त 'षट्पदम्' वृत्त निर्मित होता है।

उपसंहार (Conclusion):

प्रस्तुत शोध-पत्र के माध्यम से महाकवि दामोदर मिश्र कृत *'वाणी भूषण'* ग्रन्थ में वर्णित चयनित मात्रावृत्त छन्दों का विशद अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि *वाणी भूषण* न केवल छन्दःशास्त्र का एक प्रामाणिक ग्रन्थ है, अपितु यह कवियों एवं शोधार्थियों के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शक भी है। इसमें मात्रावृत्त छन्दों की संरचना, लक्षण तथा प्रयोग को अत्यन्त सरल एवं तार्किक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे जटिल छन्द भी सहज बोधगम्य बन जाते हैं।

'प्रज्झटिका', 'अरिला', 'पादाकुलकम्' तथा 'षट्पदम्' जैसे छन्दों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि मात्रावृत्त छन्दों में मात्राओं की निश्चितता के साथ-साथ यति, गति तथा गणों का संतुलन अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। विशेष रूप से 'प्रज्झटिका' एवं 'अरिला' में अन्त्य नियमों तथा गण-व्यवस्था का स्पष्ट निर्देश मिलता है, जबकि 'पादाकुलकम्' में लघु-गुरु नियमों की स्वतंत्रता इसे अन्य छन्दों से भिन्न बनाती है। 'षट्पदम्' की जटिल संरचना एवं बहुचरणीय विन्यास इसकी विशिष्टता को दर्शाता है।

इस शोध से यह भी सिद्ध होता है कि दामोदर मिश्र की छन्द-निरूपण शैली अत्यन्त वैज्ञानिक, व्यवस्थित एवं उदाहरणप्रधान है, जो सिद्धान्त और प्रयोग के बीच संतुलन स्थापित करती है। उनके द्वारा प्रस्तुत उदाहरण न केवल छन्दों के लक्षणों को स्पष्ट करते हैं, बल्कि काव्यगत सौन्दर्य एवं भावाभिव्यक्ति को भी प्रभावी रूप से उद्घाटित करते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि *'वाणी भूषण'* ग्रन्थ मात्र छन्दों का संग्रह न होकर संस्कृत काव्यशास्त्र की समृद्ध परम्परा का द्योतक है। वर्तमान समय में भी इस प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से उपयोगी है, बल्कि नवोदित कवियों एवं शोधार्थियों के लिए छन्द रचना की कला को विकसित करने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है। भविष्य में इस ग्रन्थ के अन्य छन्दों तथा उनके तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में और अधिक शोध की व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं।

- संदर्भसूचि:-

1. Vyas, B. S. (n.d.). *Prakrit Paingalam (Part 1)*. Internet Archive. Retrieved from Prakrit Paingalam Part -1 : Vyas, Bohla Shankar : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive
2. Mishra, D. (1903). *Vani Bhushan* (Sivadatta & K. P. Pandurang, Eds.). Tukarama Javaji. Internet Archive. Retrieved from Vani Bhushan Of Damodar Mishra Ed By Sivadatta And Kashinath Panduran 1903 (Kavya Mala 53) Tukarama Javaji : Tukarama Javaji : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive